❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति।
ऋग्वेद 1/164/46

एक ही ईश्वर को विद्वान् लोग अनेक नामों से कहते हैं, पुकारते हैं।

The wise men invoke the one God by different names.

वर्ष 39, अंक 30 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 30 मई, 2016 से रविवार 5 जून, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द : 193 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर दिल्ली में पर्यावरण शुद्धि यज्ञ

आर्यसमाजें एवं आर्य संस्थाएं अपने-अपने क्षेत्रों में अधिकाधिक स्थानों पर करें यज्ञ : 1000 स्थानों का लक्ष्य

पर्यावरण दिवस मात्र एक उत्सव नहीं, हम सबकी जिम्मेदारी है – महाशय धर्मपाल

पर्यावरण दिवस के अवसर पर दिल्ली में 1000 स्थानों पर यज्ञ करने का लक्ष्य धार्मिक ही नहीं वरन् वैज्ञानिक भी है। दिन-प्रतिदिन हो रहे पर्यावरण में बदलाव को देखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने यह महत्त्वपूर्ण कदम उठाया है। आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान एवं एम.डी.एच. के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि 'पर्यावरण दिवस मात्र एक उत्सव नहीं अपितु हम सबकी जिम्मेदारी है। कहीं ऐसा न हो कि विश्व पर्यावरण दिवस प्रकृति को समर्पित दुनियाभर में मनाया जाने वाला सबसे बड़ा उत्सव मात्र बनकर रह जाए या फिर एक दिन अखबारों में सोशल मीडिया आदि पर शुभकामनायें देने तक सिकुड़ जाए?' यदि हालात ऐसे ही रहे तो वह दिन दूर नहीं जब बाज़ार से शुद्ध ऑक्सीजन के पाउच लेकर हम सांस लिया करेंगे। कुछ वर्ष पहले तक क्या हम यह सोचते थे कि पानी खरीदकर पीना पड़ेगा? किन्तु आज पी रहे हैं न! दिन पर दिन नदियों के अस्तित्व पर खतरा मंडराता जा रहा है। बड़े-बड़े जल स्रोत सूख रहे हैं, वनों का क्षेत्रफल घट रहा है। वैज्ञानिकों का ऐसा अनुमान है कि प्रकृति ने वायुमंडल की दूसरी परत में ओजोन गैसों के रूप में जीवधारियों के लिए जो रक्षात्मक आवरण दिया है उसका दस प्रतिशत इस सदी के अंत तक नष्ट हो जाएगा। दिनों-दिन गम्भीर रूप लेती इस समस्या से निपटने के लिए आज आवश्कता है एक ऐसे अभियान की, जिसमें हम सब स्वप्रेरणा से सक्रिय होकर भागीदारी निभाएँ। इसमें हर कोई नेतृत्व

– शेष पृष्ठ 4 पर

वैज्ञानिकों का ऐसा अनुमान है कि प्रकृति ने वायुमंडल की दूसरी परत में ओजोन गैसों के रूप में जीवधारियों के लिए जो रक्षात्मक आवरण दिया है उसका दस प्रतिशत इस सदी के अंत तक नष्ट हो जाएगा। दिनों-दिन गम्भीर रूप लेती इस समस्या से निपटने के लिए आज आवश्कता है एक ऐसे अभियान की, जिसमें हम सब स्वप्रेरणा से सक्रिय होकर भागीदारी निभाएँ।

आखिर ये मन्दिर किसके हैं?

उत्तराखंड के वनों में लगी आग अभी बुझी ही थी कि अचानक वहां पर जातिवाद की लपटों ने सामाजिक समरसता को चपेट में ले लिया। दु:खद बात यह है कि घटना देवभूमि कहे जाने वाले उत्तराखंड में हुई जहाँ से सबके लिए बिना भेदभाव किये जीवनदायनी नदिया गंगा-यमुना बहती हैं। इन नदियों के उद्गम स्थल और ऋषि-मुनियों की तपो भूमि पर इतना भेदभाव क्यों! बल्कि वहां से सामाजिक समरसता की मिसाल कायम होनी चाहिए थी? देश के अलग-अलग हिस्सों से खबर आती रहती है कि मंदिरों में दलितों को जाने नहीं दिया जा सकता, यह परम्परा, कानून बनाने वालों ने इसे इतना पवित्र और मजबूत मान लिया कि सब कुछ टूट-फूट सकता है, किसी का सिर फूट सकता है, हाथ पैर टूट सकता है मगर यह कानून नहीं टूट सकता। पता नहीं यह आस्था है या पागलपन? दलितों को सिलगुर (चकरोता) मंदिर में प्रवेश कराने को लेकर राज्यसभा सांसद तरुण विजय और दलित श्रद्धालुओं पर उग्र भीड़ ने हमला कर दिया। भीड़ ने तरुण विजय, दलित नेता दौलत कुंवर की

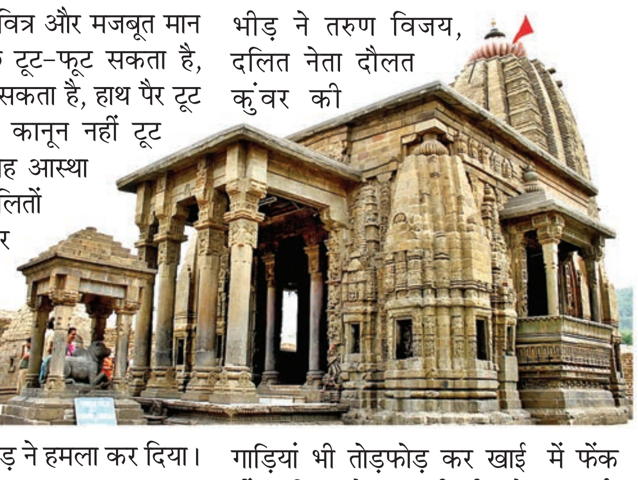

गाड़ियां भी तोड़फोड़ कर खाई में फेंक दीं। पुलिस के साथ भी भीड़ ने हाथापाई की। सांसद के सिर पर गंभीर चोटें आईं। इससे ज्यादा लज्जाजनक क्या होगा कि वर्षो से जातीय उत्पीड़न सह रहे दलितों को जब भाजपा सांसद तरुण विजय ने मंदिर में प्रवेश की मुहिम छेड़ी तो जातीय उन्माद में अंधे लोगों ने उन पर ही हमला कर दिया। दरअसल पोखरी में हु ई हिंसा क्षणिक आवेश में बौखलाए कुछ लोगों की कारस्तानी कह कर पल्ला नहीं झाड़ा जा सकता, बल्कि उत्तराखंड के इस इलाके में फैले जातिवाद का एक वीभत्स रूप था।

यदि वैदिक काल के बाद भारत की आस्था, उपासना का इतिहास देखें तो सिर शर्म से झुक जाता है। अन्धविश्वास, छुआछूत और जातिवादी परम्पराओं के कारण हिन्दुओं के हजारों मंदिर अन्य लुटेरों द्वारा तोड़ दिए गये पर यह लोग आज तक अपनी उन परम्पराओं को नहीं तोड़ पाए जो इन्होंने रंग-भेद, अमीर-गरीब को देखकर बनाई थी। – शेष पृष्ठ 4 पर

भारत से बाहर पुस्तक मेलों में सभा का पहला साहित्य प्रचार स्टाल
20वां नेपाल पुस्तक मेला (काठमाण्डू) – 27 मई से 4 जून, 2016
सम्बन्धित सूचना पृष्ठ 5 पर

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

स्थान : एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, सैन्ट्रल मार्केट के पीछे, पंजाबी बाग (प.) नई दिल्ली-110026

उद्घाटन समारोह
सोमवार 6 जून, सायं 5:30 बजे से

दीक्षान्त समारोह
रविवार 19 जून, 2016 सायं 4 बजे से

आर्यजन उद्घाटन एवं समापन दोनों कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न राज्यों से पधारे सैंकड़ों आर्यवीरों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

धर्मपाल आर्य (प्रधान), विनय आर्य (महामन्त्री), विद्यामित्र ठुकराल (कोषाध्यक्ष) – दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
सत्यानन्द आर्य (शिविर संरक्षक), सत्यवीर आर्य (महामन्त्री), स्वामी देवव्रत (प्रधान संचालक) – सार्वदेशिक आर्य वीर दल
अरविन्द नागपाल (प्रबन्धक), अशोक मेहतानी (मन्त्री) – एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल
रवि चड्ढा (प्रधान), वीरेन्द्र सरदाना (व. उप प्रधान), राजेन्द्र लाम्बा (मन्त्री) – पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मंडल

वेद-स्वाध्याय

सत्य बहरे कानों में भी घुस जाता है

ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीः ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति।
ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द कर्णा बुधानः शुचमान आयोः।। ऋ. 4/23/8
ऋषिः - वामदेवः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः - त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ-ऋतय हि=सत्य की **शुरुधः** = शोकनिवारक सम्पत्तियां **पूर्वीः सन्ति**= सनातन हैं। **ऋतस्य धीतिः**=सत्य का धारण करना **वृजिनानि**=पापों का, वर्जनीय वस्तुओं का **हन्ति**=नाश कर देता है। **ऋतस्य**=सत्य की **बुधानः**=जगानेवाली और **शुचमानः**=दीप्यमान **श्लोकः**= आवाज़ **बधिरा**=बहरे **आयोः**=मनुष्य के **कर्णा**=कानों में भी **आततर्द**=जबरदस्ती पहुंच जाती है।

विनय - प्यारो! सत्य के माहात्म्य को देखो! सत्य में वे सनातन ऐश्वर्य व बल हैं, जिनसे शोक रुक जाता है। एक बार सत्य-ज्ञान होने पर संसार के सब शोक-घोर-से-घोर दुःख-खेल दीखने लगते हैं। अनादि काल से जो भी कोई शोक के पार हो गये हैं, उन सबको किसी-न-किसी तरह सत्य ज्ञान की ही प्राप्ति हुई थी।

किसी भी वर्जनीय वस्तु से, पाप से छुटकारा चाहते हो तो सत्य का सहारा लो। सत्य को धारण करते ही मनुष्य में कोई भी बुराई नहीं ठहर सकती।जितनी मात्रा में हममें सच की कमी होती है, उतनी ही मात्रा में हमारे अन्दर बुराई को रहने की जगह होती है। जो पूरा सच्चा है, उसमें बुराई ठहर ही नहीं सकती, अतः केवल इतना आग्रह रक्खो कि हम सत्य का ही पालन करेंगे तो इससे हमारे अन्दर की सब वर्जनीय वस्तुएं-वस्तुतः ये वर्जनीय वस्तुएं पापी ही हैं और कुछ नहीं, स्वयं नष्ट हो जाएंगी।

और यदि हम सच्चे हैं तो हमारी बात प्रतिद्वन्दी को भी अवश्य सुननी पड़ती है, हमारी सचाई का उस पर भी अवश्य प्रभाव होता है। यहहोही नहीं सकता कि सचाई का प्रभाव न हो। सच्ची आवाज़ 'शुचमान' होती है, उसमें एक तेज होता है, अतएव यह 'बुधानः '- जगाने वाली होती है। इस तेज के सामने स्वार्थी मनुष्य को (जो अपनी स्वार्थ-हानि के डर से सचाई को अनसुनी करना चाहता हे) अपने कानों के द्वारों को खोलना पड़ता है। सचाई ऐसी जगाने वाली शक्ति होती है जो अज्ञान के कारण अभी तक समझ नहीं रहा है उसमें चेतना और जागृति पैदा कर देती है। सच्ची आवाज़ सीधी हृदय में जा पहुंचती है। जहां सत्य की सुनवाई होना पहले असम्भव जान पड़ता है, वहां भी अन्त में सत्य को मानना पड़ता है। निः सन्देह सचाई बहरे कानों को भी बेधकर घुस जाती है।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।

सम्पादकीय — दूसरा कदम भी साहसिक, किन्तु.....

राजनीति से हटकर बात यदि सामाजिक हित के नजरिये से देखने की आये तो अन्य राज्य भी बिहार से अच्छी शिक्षा ले सकते हैं। अप्रैल माह से शराब पर पूर्ण प्रतिबंध के डेढ़ महीने बाद बिहार राज्य सरकार ने गुटखा व पान मसाला के उत्पादन, बिक्री, प्रदर्शन व भंडारण पर भी एक साल तक पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है। राज्य के लोगों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते यह आदेश जारी किया गया है, जिसके लिए बिहार सरकार वाकई में प्रशंसा की पात्र है। बिहार में 53 प्रतिशत लोग तम्बाकू का सेवन करते हैं जिसमें 66 प्रतिशत पुरुष तथा 30 प्रतिशत से ज्यादा महिलाएं हैं। यदि तम्बाकू से हो रहे नुकसान पर गौर करें तो पता चलता है कि इसे खाने से 90 फ़ीसदी मुंह के कैंसर हो जाते हैं, यह उत्पाद मुंह के कैंसर सहित गले और कई प्रकार के कैंसरों का कारण बनता है, एक शोध रिपोर्ट के अनुसार हमारे देश में तम्बाकू से सबसे ज्यादा कैंसर के मामले सामने आते हैं और लाखों लोग असमय इसका शिकार हो जाते हैं। पर बात प्रतिबंध तक सीमित न रहे इसके लिए कुछ जरूरी कदम भी उठाए जाने चाहिए। हो सके तो सरकार को जनजागरण अभियान चलाने चाहिए, लोगों को सचेत करना होगा कि ये कदम आपका शरीर और पैसा बचाने के लिए है। कहीं ऐसा न हो कि सरकारी तौर पर प्रतिबंध लगा हो और राज्य में तम्बाखू, गुटका, शराब की अवैध कारोबारी पनप जाये और आदतवश लोग 2 रुपये का तम्बाकू (बीमारी) 10 रुपये में खरीद कर सेवन करते रहें।

क्योंकि पिछले दिनों शराब पर प्रतिबंध लगने के बाद से जैसी खबरे बिहार से आ रही हैं, वे वाकई में चौकाने वाली हैं। शराब के पूर्ण प्रतिबंध को बिहार में भले ही कड़ाई से लागू कराया जा रहा हो लेकिन सीमांचल के जिलों में न तो स्थानीय प्रशासन पूरी जवाबदेही के साथ कार्रवाई के साथ काम कर रहा है और न ही स्थानीय शराबियों पर सरकार की अपील का कोई असर पड़ रहा है। हालात यह हो गये हैं कि लोग बड़े आराम से सीमा पार कर शराब का सेवन करते हैं। इसके अलावा गरीब महिलायें इन दिनों शराब स्मगलर बन रही हैं। सीमा पर महिला जवानों की तैनाती नहीं होने के कारण शराब के कारोबार से जुड़ी महिलाओं की जांच नहीं की जाती है। बिहार और नेपाल से सटे जिले महज 5 से 20 किलोमीटर के दायरे में आते हैं। जो महज 10 मिनट से 30 मिनट की दूरी तय कर बड़े ही आराम से शराब पीकर वापस चले आते हैं जिस कारण शराब के ठिकानों पर जमघट लगा रहता है। यही नहीं अब तो शराब तस्करी की बात भी सामने आ रही है। जो नेपाल से चोरी छिपे बिहार में बेची जा रही है। ग़ौरतलब है कि जहां शराब के शौकीन ऊंची कीमत पर भी शराब खरीदने को तैयार हैं। वहीं तस्करो का गिरोह भारी मुनाफा कमाने के लिए शराब की तस्करी का कारोबार शुरू कर दिया है। बताते चलें कि हाल में ही से बालू लदे ट्रक पर शराब की बोतलें पकड़ी गयी थी। इतना ही नहीं शराब तस्कर टिफिन और झोलों में शराब भरकर ले आते हैं।

पिछले दिनों बिहार के राज्यपाल ने तंबाकू सेवन के खतरों से आगाह करते हुए कहा था कि राज्य में नागरिकों की स्वास्थ्य रक्षा के लिए काफी तेजी से तम्बाकू निषेध की दिशा में आवश्यक कार्रवाई करनी होगी ताकि तम्बाकू की खपत में तेजी से कमी लाई जा सके। बिहार में तम्बाकू सेवन उत्तरपूर्व राज्यों को यदि छोड़ दिया जाये, तो भारत के अन्य राज्यों की तुलना में यह संख्या सबसे ज्यादा है। प्रतिवर्ष तम्बाकू जनित रोगों से केवल बिहार में करीब एक लाख लोगों की मौत होती है। तम्बाकू-इस्तेमाल के कारण बिहार में सबसे ज्यादा मुँह और गले का कैंसर पाया जाता है। महिलाओं के लिए गर्भाशय कैंसर एक बड़ी समस्या है जो बिहार में अधिक मात्रा में तम्बाकू सेवन से होता है।

आंकड़ों के मुताबिक गर्भाशय कैंसर से करीब दो लाख पच्चासी हजार महिलायें पूरे विश्व में प्रतिवर्ष मरती हैं। राज्यपाल ने इस सन्दर्भ में कहा है कि इन करीब तीन लाख महिलाओं में से करीब 80 प्रतिशत महिलाएं तो सिर्फ भारत जैसे विकासशील देशों में ही अपने प्राण गँवाती हैं। जनहित में बिहार सरकार द्वारा उठाये जा रहे यह कदम सराहनीय होने के साथ अन्य राज्यों के लिए प्रेरणादायक हो सकते हैं किन्तु सामाजिक हित में सरकारे ध्यान रखे पूर्ण प्रतिबंध का अर्थ पूर्ण प्रतिबंध ही होना चाहिए।

-सम्पादक

बोध कथा — धन रूपी पहाड़ पर दान की वर्षा करो

पाकिस्तान बनने से पूर्व एक दिन मैं मुलतान से आगे जा रहा था। डेरा इस्माईल खां पहुंचना था। दरिया से नौका में बैठकर नदी को पार करना था। गाड़ी जा रही थी। बहुत तेज़। तभी बहुत ज़ोर से धक्का लगा। कई लोग अपनी सीटों से नीचे आ गिरे। गाड़ी रुक गई। गाड़ी रुकते ही कई लोग शोर मचाने लगे-टक्कर हो गई! मैं भी नीचे उतरा। इंजन की ओर चला यह देखने कि टक्कर किस वस्तु से हो गई है। कुछ लोग मुझसे पूर्व इंजन के पास हो आये थे। उनसे पूछा-''क्या हुआ?''

वे बोले-''रेल की लाइन पर पहाड़ आकर बैठ गया है।''

मैंने आश्चर्य से कहा-''लाइन पर पहाड़ कैसे आकर बैठ गया है?''

उन्होंने कहा-''स्वयं जाकर देखो। रेत का पहाड़ रेल की पटड़ी पर बैठा है।''

मैंने वहां जाकर देखा कि वस्तुतः रेत का एक ऊंचा टीला पटड़ी के ऊपर है। चकित होकर मैंने कहा-''यह टीला पटड़ी के ऊपर आ गया है या कि पटड़ी नीचे चली गई है?''

वहां उस प्रदेश के लोग भी थे। उन्होंने कहा-''पटड़ी टीले के नहीं, टीला पटड़ी क ऊपर आ गया है। यह रेतीला प्रदेश है। तीव्र आंधी चलती है तो रेत के पहाड़ उड़ने लगते हैं। उड़ते-उड़ते कभी-कभी पटड़ी के ऊपर आ बैठते हैं।''

मैंने पूछा-'' क्या वर्ष-भर ये पर्वत इसी प्रकार उड़ते रहते हैं?''

उन्होंने बताया-''नहीं, जब वर्षा हो जाय, तब नहीं उड़ते। तब रेत भी नहीं उड़ती।''

उस समय मुझे शस्त्र की बात स्मरण आई कि यह धन-रूपी पहाड़ उड़ने वाला है; एक स्थान पर बहुत समय नहीं रहता। दान-रूपी वृष्टि इस पर हो जाय तो फिर नहीं उड़ता।

ओ धनिको! दान की वर्षा करो इस धन पर, नहीं तो स्मरण रखो कि यह पर्वत उड़कर कहीं अन्यत्र चला जायेगा। यह उड़ने वाला पर्वत है।

चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घट्यो नीर।
दान दिये धन न घटे, कह गये दास कबीर।।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 सम्पर्क करें।

वधु चाहिए

30 वर्षीय आर्य युवक लम्बाई 5'10'' डबल एम.ए., पी.एच-डी. मुम्बई में योग अध्यापक वार्षिक आय 8 लाख, 26 वर्षीय आर्य युवक लम्बाई 5'8'', डबल एम.ए.,एम. एड., मुम्बई में योग अध्यापक वार्षिक आय 8 लाख। दोनों युवकों के लिए आर्य विचारधारा वाली पारिवारिक कन्याएं चाहिए। सम्पर्क करें -

- श्री राम मूर्ति आर्य,
रेलवे क्रासिंग मालीपुर, अम्बेडकर नगर
मो. 9415535059, 7666666991

वैचारिक क्रान्ति के लिए
"सत्यार्थ प्रकाश"
पढ़ें और पढ़ावें

'आर्यसमाज की स्थापना के समय ऋषि दयानन्द द्वारा व्यक्त की गई आशंका'

- मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द ने 10 अप्रैल, सन् 1875 के दिन मुम्बई के गिरगांव मोहल्ले में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी। वर्तमान में यह आर्यसमाज काकाड़वाडी के नाम से प्रसिद्ध है। हमारा सौभाग्य है कि वर्ष 1992 में एक बार हमें इस आर्यसमाज में जाने व वहां प्रातःकालीन यज्ञ में यजमान के आसन पर बैठने का अवसर मिला। आर्यसमाज अन्य धार्मिक संस्थाओं की तरह कोई संस्था या प्रचलित मतों की भांति कोई नवीन मत नहीं था। यह एक धार्मिक व सामाजिक आन्दोलन था जिसका उद्देश्य महाभारत काल के बाद वैदिक धर्म में आई अशुद्धियों, अज्ञान, अन्धविश्वासों व कुरीतियों आदि का संशोधन कर, वेद के आदर्श 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' व सत्य वैदिक मत का प्रचार कर उसको देश देशान्तर में प्रतिष्ठित करना था। यह सुविदित है कि जब महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज की स्थापना की, उस समय देश अंग्रेजों का गुलाम था। महाभारत काल के बाद लगभग 5,000 वर्षों से लोग अज्ञान, अन्धविश्वासों सहित गुलामी का जीवन बिताने के कारण वह कुरीतियों के एक प्रकार से अभ्यस्त हो गये थे। बहुत से लोगों को महर्षि दयानन्द के सुधार व असत्य मतों के खण्डन के पीछे मनुष्य व देशहित की छिपी भावना के दर्शन नहीं होते थे। उस समय की अवस्था के विषय में यह कह सकते हैं कि अधिकांश देशवासियों के ज्ञान चक्षु अति मन्द दृष्टि के समान हो गये थे जिसमें उनको अपना स्पष्ट हित भी दिखाई देना बन्द हो गया था और वह एक प्रकार से विनाशकारी मार्ग, अन्धविश्वास व कुरीतियों के मार्ग, पर चल रहे थे। उनमें से अधिकांश अपनी अज्ञानता व कुछ अपने स्वार्थों को बनायें व बचायें रखने के लिए उनका विरोध करते थे। ऋषि दयानन्द के विचारों व मान्यताओं में स्वदेश भक्ति वा स्वदेश प्रेम की मात्रा भी विशेष उन्नत व प्रखर थी। इस कारण अंग्रेज भी आन्तरिक व गुप्त रूप से उनके विरोधी व शत्रु थे। ऐसी परिस्थितियों में ऋषि दयानन्द ने व्यक्ति, समाज व देश के सुधार के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। इस स्थापना के समय ही महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज से जुड़ने वाले लोगों को एक चेतावनी भी दी थी जिसे हम आज पाठकों को ज्ञानार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द द्वारा इस अवसर पर कहे गये शब्द लिखित रूप में उपलब्ध हैं। वह स्थापना के समय उपस्थित सभी लोगों का आह्वान करते हुए कहते हैं कि 'आप यदि समाज (बनाकर इस) से (मिलकर सामूहिक) पुरुषार्थ कर परोपकार कर सकते हों, (तो) समाज कर लो (बना लो), इस में मेरी कोई मनाई नहीं। परन्तु इसमें यथोचित व्यवस्था न रखोगे तो आगे गड़बड़ाध्याय (अव्यवस्था) हो जाएगा। मैं तो मात्र जैसा अन्य को उपदेश करता हूं वैसा ही आपको भी करूंगा और इतना लक्ष में रखना कि कोई स्वतन्त्र मेरा मत नहीं है और मैं सर्वज्ञ भी नहीं हूं। इस से यदि कोई मेरी गलती आगे पाइ जाए, युक्तिपूर्वक परीक्षा करके इस को भी सुधार लेना। यदि ऐसा न करोगे तो आगे यह भी एक मत हो जायेगा, और इसी प्रकार से बाबा वाक्यं प्रमाणं करके इस भारत में नाना प्रकार के मत-मतान्तर प्रचलित होके, भीतर भीतर दुराग्रह रखके धर्मान्ध हो के (आपस में) लड़के नाना प्रकार की सद्विद्या का नाश करके यह भारतवर्ष दुर्दशा को प्राप्त हुआ है इसमें, यह (आर्यसमाज) भी एक मत बढ़ेगा। मेरा अभिप्राय तो है कि इस भारतवर्ष में नाना प्रकार के मतमतान्तर प्रचलित हैं वो भी (व) वे सब वेदों को मानते हैं, इस से वेद शास्त्र रूपी समुद्र में यह सब नदी नाव पुनः मिला देने से धर्म ऐक्यता होगी और धर्म ऐक्यता से सांसारिक और व्यावहारिक सुधारणा होगी और इससे कला कौशल्यादि सब अभीष्ट सुधार होके मनुष्यमात्र का जीवन सफल होके अन्त में अपने धर्म (के) बल से अर्थ काम और मोक्ष मिल सकता है।'

महर्षि धर्म संशोधक ऋषि व समाज सुधारक महामानव थे। उनसे पूर्व उत्पन्न किसी धर्म प्रवर्तक व समाज संशोधक ने अपने विषय में ऐसे उत्तम विचार व्यक्त नहीं किये। यदि किये भी होंगे तो उनके शिष्यों द्वारा उनका रक्षण नहीं किया गया। इन विचारों को व्यक्त करने से ऋषि दयानन्द एक अपूर्व निःस्वार्थ व निष्पक्ष महात्मा तथा आदर्श धर्म संशोधक समाज सुधारक ऋषि सिद्ध होते हैं। ऋषि दयानन्द ने जो आशंका व्यक्त की थी उसका प्रभाव हम आर्यसमाज के संगठन में देख सकते हैं। आर्यसमाज का संगठन गुटबाजी व अयोग्य लोगों के पदों पर प्रतिष्ठित होने से त्रस्त है। सभाओं में भी झगड़े देखने को मिलते हैं। इन्हें समाप्त करने के छुट-पुट प्रयत्न भी होते हैं परन्तु सफलता नहीं मिलती। इसका मूल कारण अविद्या है जिसे दूर नहीं किया जा सका है। यही कारण है कि आर्यसमाज के सामने मनुष्य के जीवन व चरित्र के सुधार सहित जीवन निर्माण का जो महान लक्ष्य था, वह पूरा न हो सका। हम आर्यसमाज के सभी अधिकारियों व सदस्यों को ऋषि दयानन्द के उपर्युक्त विचारों पर ध्यान देने व विचार करने का अनुरोध करते हैं। यदि हमने ऋषि के सन्देश को समझ कर, अपनी अविद्या को हटाकर, उसको आचरण में ले लिया तो पूर्व की भांति आर्यसमाज सहित देश का कल्याण हो सकता है। इसी के साथ इन पंक्तियों को विराम देते हैं। **– देहरादून**

मोक्ष का स्वरूप

मोक्ष के साधन ज्ञान कर्म उभय है। वह समुच्चयवाद से है। उसके पश्चात् मोक्ष का स्वरूप भी चितनीय है। प्रथम यह चिंतनीय है मोक्षभावरूप है वा अभावरूप है। आर्य समाज मोक्ष को भावरूप मानता है। साधारण रीति से भी देखा जाये तो जीव की प्रवृत्ति सर्वथा अभाव में नहीं है। यह सत्य है जीव दुःख नहीं चाहता दुःखभाव चाहता है वह भी केवल दुःखभाव ही नहीं उसके साथ सुख हो तब तो जीव प्रसन्न होता है। केवल अभाव तो शून्य ही होगा। इसलिए केवल अभाव मानना शून्यवाद का दूसरा नाम ही है जिसे वैदिक सिद्धान्त लिखना ठीक नहीं है। इसलिये आर्य-समाज मोक्ष को भावरूप मानता है सत्यार्थप्रकाश समुल्लास 9 पृष्ठ 293 पर निम्न पाठ है-

प्रश्न-मुक्ति किसको कहते हैं?

उत्तर-'मुक्ति पृथग्भवन्ति जना यस्यां सा मुक्ति, जिसमें छूट जाना हो उसका नाम मुक्ति है।

प्रश्न-किससे छूट जाना?

उत्तर-जिससे छूटना चाहते हैं।

प्रश्न-किससे छूटना चाहते हैं?

उत्तर-दुःख से।

प्रश्न-छूट कर किसको प्राप्त होते और कहाँ रहते हैं?

उत्तर-सुख को प्राप्त होते हैं और ब्रह्म में रहते हैं।

इस पाठ से सिद्ध है कि महर्षि जी मोक्ष को भावरूप मानते हैं। इसके पश्चात् एक बात विचारणीय है वह यह कि मोक्षावस्था में जीव ब्रह्मरूप हो जाता है वा जीव जीव ही रहकर मोक्ष सुख का भोक्ता होना है। यदि जीव को ब्रह्म रूप की प्राप्ति स्वीकार करली जाय उस अवस्था में जीव सुखरूप (आनन्द रूप) तो हो जायेगा क्योंकि ब्रह्म को सब (ही) सच्चिदानन्द रूप माना है उस अवस्था में वह सुख का भोक्ता न होगा। ब्रह्म को कोई भी भोक्ता नहीं मानता है। जो भोक्ता होगा वह कर्त्ता भी होगा यह सामान्य नियम है। जीव कर्त्ता है अतः भोक्ता है जीव कभी दुःखी होता है कभी सुखी। जीव को सुखदुख निमित्त से होते हैं। ब्रह्म में वेसबुनिमित्त न होने से वह जीववत् भोक्ता न होगा और जीव ब्रह्मरूप न होगा।

इस विषय में सबसे अधिक विचार उपनिषद् और वेदांत सूत्रों में है और सूत्रों के विषय वाक्य उपनिषद् वचन ही हैं। इसलिये मैं उनके पाठ लिखना उचित जान कर लिखता हूँ आशा है पाठक उन पर विचार करेंगे।

संपाद्याविभाव स्वेन शब्दात्।

वेदांत सूत्र 4/ 4/1

इन सूत्रों के विषय वाक्य इस प्रकार हैं -

एव्मेदैष सप्रसादोऽगेम्माच्छरागत्स मत्थाय पर ज्योतिरूपसंपद्य स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यत। स उत्तम पुरुष।

छन्दोग्योपनिषद् 8,12, 3।

भावार्थ-इस प्रकार यह जीव (सप्रसाद) इस शरीर से पृथक होकर परम्ज्योति ब्रह्मा को प्राप्त होता है और अपने स्वरूप में (स्वेन रूपेण) स्थित होता है व स्वराय को प्राप्त होता है वह उत्तम पुरुष है।

इसमें शंका होती है, इसको मोक्ष विषयक क्यों माना जाए कि यह किसी अन्य अवस्था का प्रतिपादक क्यों नहीं। इस शंका के निवारण करने के लिए दूसरा सूत्र है''मुक्त प्रतिक्षानात्'' इसका विषय वाक्य है।

अशरीर चाव सन्त न प्रियाप्रिये स्पृशत

छा. 8, 12, 1।

भावार्थ-जीव को सुख-दुख शरीर साथ होने की अवस्था में ही होते हैं। अशरीर अवस्था में इनका स्पर्श नहीं होता इसलिये यह अशरीरावस्था विषयक होने से मोक्ष विषयक ही है और प्रकरण आत्मा का है। यथा-

य आ माऽपहतपाप्मा विजऐ विमृत्यु।

छा. 8, 7, 1।

जो आत्मा पापरहित जरा रहित और मृत्यु रहित है उस आत्मा का प्रकरण होने से मोक्ष का ही प्रतिपादक है।

इन सूत्रों और वाक्यों में 'स्वेन रूपेण'' पाठ है और आगे उसे उत्तम पुरुष लिखा है। क्या यह जीव ब्रह्मरूप में रहता है इस बात को कहती हैं व जीव जीवरूप में ही रहता है इसका प्रतिपादक है। अगले सूत्र में इस शंका को निवृत्त कर देते हैं।

सङ्कत्पादेव तु तच्छुतेः।

वेदांत दर्शन 4/ 4 /8

मोक्ष में जितने भाग हैं। सब संङ्कल्प से ही प्राप्त होते हैं। संसार सम यत्न साध्य नहीं होते।

''स यदि पितृलोककामे'' भवनि सङ्कल्पादेवस्य पितर समुपतिष्ठन्ति।

छां 8, 2, 1

मोक्षावस्था में यदि पितृ लोक की कामना हो तो सङ्कल्प से ही प्राप्त हो जाता है। वह सुख सङ्कल्प से मिल जाते हैं।

जब सङ्कल्प से भाग मिलते हैं तो ब्रह्म नहीं जीव ही होगा इसके आगे फिर लिखा है-

जगद्व्यापारवर्जे प्रसरणाद संनिहित त्वाच्च। *वेदांत दर्शन 4, 4, 17*

शङ्करभाष्य जगदुत्पत्त्यादि व्यापार वर्जयित्वान्यदाणमाद्यात्मकमैश्वर्य मुक्ताना भवित्मुर्हति। जगद् व्यापारन्तु नित्य सिद्धस्यैवेश्वन्य।

जगत् रचना तो परमात्मा के ही आधीन है। यह जीव को कभी प्राप्त नहीं होता। अन्य बातें मोक्ष जीव में हो जाता है। फिर सूत्रकार लिखता है-

भोग मात्र साम्य लिंगाच्च। *4, 4, 21*

भागमात्रमेवैषामनादिसिद्धेनेश्वरेण समानमिति श्रूयते। *शङ्करभाष्यम्*

भोग मात्र ईश्वर की समता है। अन्य सब बातों में समता नहीं है अर्थात् जीव को मोक्षावस्था में दुख नहीं होता वह सुख

- शेष पृष्ठ 6 पर

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश का चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में चरित्र निर्माण एवं आत्म रक्षा प्रशिक्षण शिविर हंसराज मॉडल स्कूल पंजीबी बाग नई दिल्ली में 22-29 मई 2016 के मध्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर समापन समारोह में एम.डी. एच. की डायरेक्टर श्रीमती ज्योति गुलाटी ने सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थियों को प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह भेंट किये। प्रतिभाशाली बालिकाओं को प्रोत्साहित करने से आत्म विश्वास बढ़ने के साथ-साथ उनका सर्वांगीण विकास होता है। शिविर में साध्वी उत्तमायति, प्रधान संचालिका सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, समाजसेविका श्रीमती कृष्णा ठुकराल, डॉ. रचना चावला, आचार्य हीमाल एच. भट्ट, दिल्ली संस्कृत अकादमी के पूर्व सचिव डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, श्री जगवीर आर्य ने व्यक्तित्व विकास एवं चरित्र निर्माण पर प्रेरक विचार प्रकट किये। इस अवसर पर वीरांगना दल ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, व महिला सशक्तिकरण के लिए चित्र प्रदर्शनी लगाई गयी।

शिविर में लगभग 200 वीरांगनाओं ने लाठी, तलवार, स्तूप, योगासन, कराटे, बौद्धिक ज्ञान, नैतिक शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर संचालिका श्रीमती शारदा आर्या, उपसंचालिका श्रीमती स्नेह भाटिया, वरिष्ठ नागरिक क्लब की सूत्रधार श्रीमती किरण चोपड़ा, चेयरमैन श्री आर. एस. शर्मा, मंत्राणी श्रीमती लीपिका आर्या, श्रीमती सुनीति जावा, साध्वी सुमेधा, श्रीमती वीणा आर्या, डॉ. सुनीति आर्या, श्रीमती उमा शशि दुर्गा, श्रीमती पुष्पा महावर, श्रीमती एकता तनेजा, श्री क्रान्ति तनेजा, एस. के. कोचर, रवि चड्ढा एवं स्कूल स्टाफ के योगदान से शिविर अभूतपूर्व सफल रहा। **-चन्द्रमोहन आर्य**

शिविर समापन समारोह के अवसर पर श्रीमती ज्योति गुलाटी जी को सम्मानित करती आर्य वीरांगना दल की अधिकारी। व्यायाम प्रदर्शन करती आर्य वीरांगनाएं। वीरांगनाओं को प्रमाण पत्र प्रदान करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, ठाकुर विक्रम सिंह, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, साध्वी उत्तमा यति एवं सभा उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान

प्रथम पृष्ठ का शेष

विश्व पर्यावरण दिवस .....

करें, क्योंकि जिस पर्यावरण के लिए यह अभियान है उस पर सबका समान अधिकार है, ताकि पर्यावरण दिवस हमारे लिए कोई उत्सव न होकर एक जिम्मेदारी भरा दिवस बन जाये।

आमतौर पर देखा जाता है कि लोगों को जागरूक करने की दिशा में सरकार पर्यावरण बचाने के नाम पर हर साल करोड़ों रुपये विज्ञापन पर खर्च करती है। किन्तु फिर भी सुधार न के बराबर है नतीजा ढाक के तीन पात। दूसरा आज जहाँ भी नजरे दौड़ाकर देखते हैं तो दिन पर दिन हरे भरे पेड़ पौधों की जगह सीमेंट-कंक्रीट के मकान नुमा जंगल और जहरीला धुआं उगलती फैक्ट्रियाँ ले रही है जिस कारण प्रदूषण की मात्रा इतनी अधिक बढ़ती जा रही है कि इंसान चंद सांसें भी सुकून से लेने को तरसने लगा है। कहीं ऐसा तो नहीं की प्रकृति को नष्ट कर हम अपना ही गला अपने ही हाथों से घोट रहे हों?

सबसे दु:खद बात यह है कि आज पर्यावरण के रख-रखाव को लेकर पश्चिमी देश हमें सचेत कर रहे हैं। जबकि हम तो इनसे कई हजार साल आगे हैं। प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों की जीवन में क्या उपयोगिता है? इसका ज्ञान वैदिककाल में ही हमारे ऋषि मुनियों ने हमें दे दिया था। **ऋग्वेद कहता है इस ब्रहांड में प्रकृति सबसे शक्तिशाली है, क्योंकि यही सृजन एवं विकास और यही ह्रास तथा विनाश करती है। अत: प्रकृति के विरुद्ध आचरण नहीं करना चाहिए।**

प्राचीनकाल से हम यह चिंतन के अनुसार सुनते आए हैं कि जीव पंचमहाभूतों जल, पृथ्वी, वायु, आकाश, अग्नि से मिलकर बना है इनमें से किसी की भी सत्ता डगमगा गई तो इसका हश्र क्या होगा, यह सभी जानते हैं। फिर यह अज्ञानता क्यों? पढ़-लिखकर भी मनुष्य अज्ञानी बनकर स्वार्थ तक सिमट गया है। वह इन तत्वों के प्रति छेड़छाड़ को गंभीरता से क्यों नहीं ले रहा है। जहां हम कहते आ रहे हैं कि हम भौतिक सुख-संपदा में आगे बढ़ रहे हैं, वहीं उसके कुत्सित परिणाम का दमन क्यों भूल रहे हैं। जब तक किसी भी वस्तु, आविष्कार, खोज के गुण-दोष को नहीं टटोलेंगे, तब तक आगे बढ़ना हमारे लिए पीछे हटने के बराबर है। पर्यावरण का ध्यान रखते हुए हम आगे बढ़ें, तभी हमारे लिए सही अर्थों में आगे बढ़ना है।

पृथ्वी का अस्तित्व बचाने के लिए जल तथा पर्यावरण प्रदूषण को हर तरह से रोकना होगा, नहीं तो लोगों के सामने इसका भयावह परिणाम आ सकता है। जैसे-जैसे विकास की रफ्तार बढ़ रही है, जीवनयापन भी कठिन होता जा रहा है लेकिन फिर भी शरीर से नित नयी व्याधियां जन्म ले रही हैं। आश्चर्य तो यह है कि पुराने समय में जब सुबह से शाम तक लोग प्रत्येक काम अपने हाथों से करते थे, तब वातावरण कुछ और था, पर्यावरण संरक्षित था। इसीको हमें ध्यान में रखना होगा। मानव जीवन प्रकृति पर आश्रित है अत: प्रकृति के साथ दुश्मन की तरह नहीं, वरन् मित्र की तरह काम करना शुरू करना होगा जिसके लिए हमें इस कार्य में किसी को नहीं जोड़ना बल्कि इस शुभ कार्य में इस अभियान में खुद को जोड़ना है। सोचो जब आगे आने वाली पीढ़ी हमसे साँस लेने के लिए शुद्ध हवा मांगेगी तब-तक शायद हमारे पास न जवाब होगा और न पर्यावरण?

प्रथम पृष्ठ का शेष

आखिर ये मन्दिर ...

जब यह सामंतवादी लोग मानते हैं कि हम सब एक ईश्वर की संतान है तो फिर यह सोच कहाँ से आई कि उसके मंदिर में फ़लां आ सकता है, फ़लां नहीं, फलां पवित्र है और फलां अपवित्र? सामंतवाद कहो या जातिवाद आज की तारीख़ में अपने धार्मिक चोले में अपनी अतार्किकता, अपनी अमानवीयता को बचाकर रख सकता है, क्योंकि उस पर प्रश्न लगाना सबसे कठिन है, क्योंकि यह संवेदनशील मामला है। यह ऊंच-नीच का भेदभाव रखने वाले लोग दलितों के हर तरह के इस्तेमाल में विश्वास तो रखते हैं, किन्तु उसे अधिकार देने में नहीं आखिर ऐसा क्यों, ये मन्दिर किसके हैं?

शनि शिगणापुर का मामला अभी भी ठंडा नहीं हुआ है जब एक महिला ने पुरुषों की आँखें बचाकर मंदिर में प्रवेश कर लिया था जिसके बाद इन तथाकथित धर्म के ठेकेदारों द्वारा उक्त मंदिर को अपवित्र बता गाय के दूध से धोने का ढोंग रचा गया था। शिगणापुर की इस पहल ने मुस्लिम महिलाओं को भी क़दम बढ़ाने के लिए प्रेरित किया था और वे भी मुंबई के आज़ाद मैदान में हाजी अली की दरगाह में प्रवेश की मांग को लेकर इकट्ठा हुईं थीं। देश को स्वतंत्र हुए 70 साल बीत गये किन्तु धर्म ध्वज वाहक अभी तक तय नहीं कर पाए कि किसे मंदिर में प्रवेश दें, किसे नहीं! यदि यह मंदिर इनके अपने हैं तो लोगों की गलती है कि इनके अन्दर जाते क्यों हैं; और यदि मंदिर भगवान के हैं तो फिर यह लोग रोकने वाले कौन होते हैं? यदि यह लोग समाज को सही दिशा नहीं दे सकते, इन खोखली और बेजान परम्पराओं के खिलाफ नहीं बोल सकते तो यह देश धर्म के लिए कतई शुभ नहीं है। न इनको धर्म का ठेकेदार बनने का अधिकार है। सच में सांसद तरुण विजय पर हुए हमले में कठोर स्वर सुनाई देने चाहिए थे। मुख्यमंत्री व मंत्रियों द्वारा दोषियों पर कड़ी कार्यवाही की जानी चाहिए। तमाम दलों के नेताओं को अपने जातीयहित छोड़कर इस मानसिक बीमारी के खिलाफ अपनी आवाज़ मुखर करनी चाहिए तभी इस देश में कोढ़ की तरह फैले जातिवाद को कम किया जा सकता है सबसे पहले तो यहां के बुद्धिजीवी, महंत, मंडलेश्वर यह स्वीकार करें कि यहां जातिवाद की गहरी पैठ है इसे समाप्त करना है फिर वे लोग धीरे-धीरे लोगों में जागरूकता पैदा करें ताकि देश इन लज्जाजनक कार्यों से बाहर आ सके।

-राजीव चौधरी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित व्यावहारिक संस्कृत शिक्षण कक्षाएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित व्यावहारिक संस्कृत शिक्षण कक्षाओ का शुभारम्भ 8 मई 2016 गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम, आर्य समाज आनन्द विहार, एल ब्लाक, हरी नगर नई दिल्ली में किया गया था। संस्कृत सीखने में जहां बच्चों ने अपनी जिज्ञासा प्रकट की वहीं युवा वर्ग भी इन कक्षाओं को आयोजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जो कक्षाओं में भारी संख्या में बच्चों की उपस्थित देख कर स्पष्ट होती है। ये कक्षाएं प्रत्येक रविवार सायं 5 से 7 बजे तक आयोजित की जा रही हैं। आचार्य धनन्जय शास्त्री जी बच्चों को संस्कृत पढा रहे हैं। इसी के साथ आर्यसमाज जनकपुरी सी-3 में भी वेद मन्त्र कक्षा का आयोजन किया जा रहा है, जहां आचार्य प्रणवदेव जी प्रशिक्षण दे रहे हैं।

दोनों कक्षाओं में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रत्येक प्रशिक्षु विद्यार्थी 12 कक्षाओं के प्रशिक्षण के उपरान्त प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे।

व्यवहारिक संस्कृत प्रशिक्षण कक्षा में बच्चों एवं आर्य महिलाओं को सामान्य संस्कृत का प्रोजेक्टर के माध्यम से ज्ञान देते आचार्य धनञ्जय शास्त्री जी।

सभा ने लगाया नेपाल पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य स्टाल

उमड़ी पुस्तक प्रेमियों की भारी भीड़

आर्य समाज काठमाण्डू नेपाल एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में नेपाल में 27 मई से 4 जून तक चलने वाले 20वें पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य का स्टाल लगाया गया। यह पुस्तक मेला भरीकुटी मण्डप, प्रदर्शनी हॉल, काठमाण्डू, नेपाल में आयोजित किया गया है। इस पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य स्टाल का प्रतिनिधित्व श्री रवि प्रकाश जी दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से कर रहे हैं। दिल्ली सभा की ओर से आयोजित वैदिक साहित्य स्टाल पर दर्शकों की भारी भीड़ को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि नेपाल की जनता में वैदिक साहित्य का स्वाध्यान करने में विशेष रुचि है।

20वें नेपाल पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर नेपाल आर्यसमाज के सहयोगी कार्यकर्त्ता एवं उपस्थित पुस्तक प्रेमी वैदिक साहित्य देखते हुए

राम प्रसाद बिस्मिल जयन्ती पर विशेष

ईश्वर-विनय

ईश्वर! दया हो हम पर, अब वल्वला नहीं है,
दुख और जो उठावें, वह दम रहा नहीं है।
बरसें हज़ारों बीतीं दुख सहते सहते हमको,
क्या भाग्य में हमारे, अब सुख बदा नहीं है।

हम गिर गए हैं इतने, हस्ती मिटी हमारी,
पर हाथ क्यों दया का, अब तक उठा नहीं है।
तुमने हमें बिसारा हे नाथ! क्या किया यह,
हमने तो तुमको अब तक, दिल से तजा नहीं है।

भूमी रही न अपनी न ये राज्य ही रहा है,
पल्ले हमारे अब तो, कुछ भी रहा नहीं है।
करते थे राज हम ही संसार-भर में इक दिन,
आधीन दूसरों के, कोई रहा नहीं है।

इंग्लैण्ड, फ्रांस, इटली, स्पेन जर्मनी सब,
आधीनता में पर की, कोई फंसा नहीं है।
जापान, चीन, फारस, तुर्की, अमेरिका में,
स्वच्छन्द वायु सदियों से, खूब बह रही है।

इक रूस के निवासी दुख और पा रहे थे,
स्वाधीनता की देवी अपना उन्हें रही है।
क्या भाग्य में हमारे ही थी बदी गुलामी,
सदियों से जन्मभूमी, जो दुख उठा रही है।
परमेश! तुमने हमको ऐसा भुला दिया क्यों,
कुरुक्षेत्र की प्रतिज्ञा, क्या याद अब नहीं है।

बन्दी दु:खी जनों का उद्धार आप करने,
जन्मे थे जेल में ही, क्या ध्यान ही नहीं है।
अन्याय कंस का प्रभु! तुमने ही था मिटाया,
रावण को तुमने छोड़ा, लंका में भी नहीं है।

अब देश की दशा फिर उससे अधिक है बिगड़ी,
बल, बुद्धि, विद्या, लक्ष्मी कुछ भी रहा नहीं है।
अतएव हे दयामय! सत्वर दया दिखाओ,
अब और देरी करनी, 'बिस्मिल' उचित नहीं है।

-अमर शहीद राम प्रसाद बिस्मिल

मैं आर्यसमाजी कैसे बना?

एक पौराणिक की आर्य यात्रा

- सुरेन्द्र कुमार शर्मा

घोर पौराणिक व पूजा पद्धति में अंधविश्वास की सीमा तक जाने वाले ब्राह्मण परिवार में मेरा जन्म हुआ। बात सन् 1961-62 की है जब मैं 12-13 वर्ष का था मैं आर्य समाज सरोजनी नगर नई दिल्ली में श्री कृष्ण दत्त ब्रह्मचारी जी (जो सीधे लेटकर गर्दन हिलाकर सामाधिवस्था में) से वैदिक मंत्रों से युक्त सतयुग से महाभारत काल तक की घटनाओं पर आधारित वैदिक प्रवचन सुने। इन प्रवचनों से परिवार के अन्य सदस्यों पर तो कोई प्रभाव नहीं पड़ा पर मेरे संस्कार के बीज अवश्य उभर आए और पुनर्जन्म व कर्मफल के सिद्धान्त की सत्य धारणा तभी से हृदय पटल पर गहरी छाप छोड़ गये। परिवार में सभी रामचरित मानस के पाठी थे परन्तु यज्ञ के प्रति मेरा ही रुझान तभी से था। आर्य व वैदिक सिद्धान्तों से परिचय न हो पाने के कारण मैं भी पौराणिक कथाओं व क्रिया कलापों के पालने में ही झूलता रहा परन्तु यज्ञ व सत्य वैदिक धर्म की चिंगारी पौराणिक पद्धति की राख में दबी हुई भी मेरे भीतर चमकती रही। मैं होली पर प्रतिवर्ष बरनावा(बड़ौत उ.प्र.) में आयोजित चतुर्वेदीय यज्ञ में अवश्य शामिल होता था।

वर्ष 1998-99 में जब मैं केन्द्रीय विद्यालय नोएडा में वरिष्ठ हिन्दी अध्यापक के पद पर कार्यरत था तो विद्यालय में एक योग शिक्षक श्री वेद प्रकाश आर्य (सागरपुर दिल्ली वाले) स्थानान्तरित होकर आए। मेरे लिए यह वह समय था जब महर्षि दयानन्द सरस्वती मेरी दृष्टि में प्रचारक ही थे। आर्य सिद्धान्त, साहित्य, दयानन्दजी से मेरा कोई विशेष परिचय नहीं था। श्री वेद प्रकाश जी ने लोगों से जब यज्ञ-हवन के प्रति मेरी रुचि सुनी तो मुझे 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ने को दिया और आर्य जगत् व साहित्य सिद्धान्तों से थोड़ा-थोड़ा परिचय करवाना प्रारम्भ किया। विद्यालय में जहां अन्य शिक्षक उनकी बातों पर टिप्पणियां करते थे मैं उन्हें ध्यान से सुनता था। 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रथम पठन विशेषत: अन्य मतों के खण्डन वाले भाग ने मेरी आंखें खोल दीं। मैं श्री वेद प्रकाश जी के साथ सागरपुर सत्संगों में भी तीन बार गया। मेरे प्रश्नों के उत्तर भी वे प्रेम से देते थे। सबसे विशेष बात तो यह थी कि विरोधी टिप्पणियों, मज़ाक बनाने पर भी वे कभी उद्वेलित, आक्रोशित नहीं होते थे। जब तक मैं आर्य समाज, आर्य सिद्धान्तों को समझता तब तक मेरा स्थानान्तरण कलकत्ता हो गया।

दस वर्ष तक कलकत्ता, अलवर, रायपुर, दिल्ली से दूर रहकर अध्यापन कार्य करता रहा, अनेक प्रकार के संघर्षों से जूझते हुए मन में यह संकल्प लिया कि सेवानिवृत्ति के पश्चात् आर्य साहित्य का, वैदिक ग्रंथों का अध्ययन अवश्य करूंगा। इसकी घोषणा मैंने केन्द्रीय विद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़) में सेवानिवृत्ति वाले दिन 250 अध्यापकों के मध्य में की। अस्थायी अध्यापन हेतु मुझे अनेक अवसर मिल रहे थे परन्तु सबको ठुकराते हुए मैं दिल्ली अपने नए मकान में आ गया। सत्यार्थ प्रकाश सहित समस्त आर्य साहित्य, उपनिषद, मनुस्मृति आदि सत्य साहित्य मैंने 2011-12 के पश्चात् पढ़े व समझे। नोट्स भी बनाएं। असत्य साहित्य कबाड़ में बेच दिया। प्रीत विहार दिल्ली के आर्य समाज से नाता जोड़ा। यहां आरदणीय श्री सुरेन्द्र रैली जी के निर्देशन में 'मनुर्भव' कार्यशाला, देशद्रोही-विरोधी जुलूसों में तथा दस दिवसीय 'पुरोहित प्रशिक्षण' में मंत्रोच्चारण सीखने हेतु भाग लिया। 8 अप्रैल 2016 को मैं धर्मपत्नी के साथ जिनका उस दिन जन्म दिन भी था मंडी हाउस फिक्की सभागार, दिल्ली में प्रथम बार आर्य समाज के कार्यक्रम में भाग लेने गया था तो अचानक वहां मुझे आर्य समाज प्रेरक श्री वेद प्रकाश आर्य जी मिल गये। मैंने श्री वेद प्रकाश आर्य जी को बतलाया कि अब मैं 15 साल बाद वैदिक पथ पर साथ देने पुन: आपके साथ जुड़ गया हूं।

- सेवा निवृत्त उपप्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली

Glimpses of the Atharva Veda

- Priyavrata Das

Continue from last issue :-

Two Births of Man

"The spiritual teacher, taking the freshly admitted student in his charge makes him an embryo within; he bears him in his belly three nights, all the divine entities gather unto him to see him born". The Vedas prescribe two births among all beings for man: the first from the mother and the second and more significant from the mother of learning. Man is born as a being of instruction whereas the other beings live on mere instinct which is their natural tendency to behave and to live in a certain way without reasoning and training. The second birth entities man to be twice-born. He gains capacity to earn the highest prize of liberation through learning.

The new entrant called Brahm achari is delightedly borne by the teacher in his belly for three nights. These three nights revealed in the verse refer to the threefold ignorance of the student that encircle him. The threefold knowledge imparted to him are : relation of God to Soul, of God with Nature and of Soul with Nature.

आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः। तं रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः।। (Av.xi.5.3)

Acarya upanayamano brahmcarinam krnute garbhamantah.
tam ratristisram udare bibharti tam jatam drastumabhisamyanti devah..

The girl child blossoms into a woman

"Beauty and softness at birth (the Soma) accepts you as wife. As the first husband, he then hands you over to sweet voice (the Gandharva) as your second husband. Then the Gandharva gives you to the heat of passion (the Agni) as your third husband. Then it is given to me, born out of human being for the sake of bearing children and building prosperity."

"I release you now from the fetters of your parental home with which the propitious creator Lord has attached you by birth. O bride, plenty of space is there for you to share with me your husband."

"O propitious one, as augmentation of the household and as gladdening to the husband, as pleasing to the father-in-law, and delighting to the mother-i-law enter this auspicious home."

सोमो ददद्गन्धर्वाय गंधर्वो दददग्नये। रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम्।। (Av.xiv.2.4)

Somo dadad gandharvaya gandharvo dadadagnaye. rayim ca putram cadadagniramahyamatho imam..

प्र त्वा मुंचामि वरुणस्य पाशाद्येन त्वाबध्नात् सविता सुशेवाः। उरुं लोकं सुगमत्र पंथां कृणोमि तुभ्यं सहपत्न्यै बधु।।(Av.xiv.1.58)

Pra tva muncami varunasya pasadyena tvabadhnatsavita susevah.
urum lokam sugamatra pantham kmomi tubhyam sahapatnai vadhu.

सुमंगली प्रतरणी गृहाणा सुशेवा पत्ये श्वशुराय शंभूः।
स्योना श्वश्वै प्र गृहान्विशेमान्।। (Av.xiv2.26)

Sumangali pratarani grhanam suseva patye svasuraya sambhuh. syona svasrvaih pra grhanviseman..

Women shall participate in fire ritual

The wedded couple carry portion of the sacrificial fire right from the marriage altar. That represents the new household they solemnly promise to launch. henceforth, each morning wife and husband, they together kindle the sacred fire which they consider as extra- ordinary guest of the household with reverece.

The bride's father, in the marriage ceremony declares with delight-"all my daughters are pure, pious and conversant with ceremonial rites. They chant the sacred hymns with deep devotion. I place them in the hands of pious learned men. May the resplendent Lord accept my oblations."

Fire ritual forms a daily duty of the househod which is a symbolic dedication. The fragrant materials offered to the sacred fire are magnified in quantity and quality to be spread out in all corners with no bias and distinction. The mistress of the household leads the rite each day. Her daily routine begins with the auspicious rity which inspires her duties of the day. The Vedic texts extol women as a scrificial fire that gives birth to virtuous progeny.

शुद्धा पूता योषितो यज्ञिया इमा ब्रह्मणां हस्तेषु प्रपृथक् सादयामि।
यत्काम इदमभिषिचामि वोऽहमिन्द्रो मरुत्वान्त्स ददातु तन्वे।।(Av.vi.122.5)

Sudhhah puta yosito yajniya ema brahmanam hastesu praprthak sadayami.
Yatkama idamabhisincami vo hamindro marutvansa dadatu tanve..

To be Continued......

आओ संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ -2

गतांक से आगे....

गम् (Go) लट् लकार (Present Tense)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	गच्छति		
मध्यम	गच्छसि		
उत्तम	गच्छामि		

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	सः (पु०)		
	सा (स्त्री०)		
	तत् (न०)		
मध्यम	त्वम्		
उत्तम	अहम्		

गम् धातु - गम् एक धातु है। धातु को आप एक मूल शब्द की तरह समझिए। इस एक गम् शब्द से बहुत सारे शब्द बनाए जा सकते हैं। जैसे गच्छामि, गच्छसि, गच्छति, आच्छामि आदि। ये सब शब्द धातु के पहले उपसर्ग (Prefix) और प्रत्यय (Suffix) लगाने से बने हैं। इसी प्रकार हम दो या दो से अधिक धातुओं को मिलाकर और फिर उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर अनेकों अनेक शब्द बना सकते हैं।

पुरुष : संस्कृत वाक्य बनाने से पहले मैं आपको उत्तम मध्यम और प्रथम पुरुष की जानकारी देना चाहता हूँ।

1. प्रथम पुरुष : जब श्रोता के अतिरिक्त किसी अन्य पुरुष के लिए बात की जा रही हो तो उसे प्रथम पुरुष कहते हैं। जैसे- वह, वे, उसने, यह, ये, इसने, आदि। जैसे वह लड़का जा रहा है, वह 2 चीजे वहाँ पड़ी हैं, उन सब ने हाथ में फल लिए हुए हैं।

2. मध्यम पुरुष : जब बोलने वाला श्रोता के साथ बात कर रहा हो, उसे मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे तू, तुम, तुझे, तुम्हारा आदि। जैसे तुम क्या करते हो?, तुम कहाँ जाते हो?, तुम्हारा क्या नाम है?, तुम दोनों क्या कर रहे हो? तुम सब भागते हो।

3. उत्तम पुरुष : जब बोलने वाला अपने लिए बोल रहा हो उसे उत्तम पुरुष कहते हैं। जैसे मैं, हम, मुझे, हमारा आदि। जैसे मैं खाता हूँ, मैं वहाँ जाता हूँ, मैं सोता हूँ, हम सब लिखते हैं, हम दोनों खुश हैं।

संस्कृत वाक्य : हमने पिछले पाठ मे सीखा था कि ''अहम् गच्छामि'' का अर्थ ''मैं जाता हूं'' है। आप ऊपर की तालिकाओं (Tables) मै देखें कि दोनों (''अहम'' और ''गच्छामि'') ही शब्द उत्तम पुरुष की श्रेणी में आते हैं। उत्तम पुरुष को अंग्रेजी में First Person भी कहते हैं। नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यान से पढ़ें-

1) अहं गच्छामि 2) त्वं गच्छसि 3) सः गच्छति 4) सा गच्छति

स्पष्टीकरण

1) अहं गच्छामि मैं जाता हूँ। **2) त्वं गच्छसि** ''त्वं'' अर्थात् तू, तुम या आप। ''गच्छसि'' अर्थात् ''तू जाता है''। एक बार फिर ऊपर की तालिकाँओं में देखें कि दोनों (''त्वं'' और ''गच्छसि'') ही मध्यम पुरुष की श्रेणी में आते हैं। आप मध्यम पुरुष (Second Person) का प्रयोग अपने सम्मुख व्यक्ति के लिए करते हैं। स्वयं के लिए ''अहं'' का प्रयोग करें। यह भी ध्यान रहे कि उत्तम पुरुष क्रिया (Verb) को उत्तम पुरुष सर्वनाम/संज्ञा (Pronoun/Noun) के साथ ही प्रयोग करें, यानि-

गलत	सही
अहं गच्छसि	अहं गच्छामि
त्वं गच्छामि	त्वं गच्छसि

3) सः गच्छति : ''सः'' (He) अर्थात् वह या वो। ''गच्छति'' अर्थात् ''वह जाता है''। सः को पुलिङ्ग के लिए ही उपयोग किया जाता है। कोई लड़का या आदमी जाता हो तो ही आप सः गच्छति का उपयोग कर सकते हैं।

4) सा गच्छति : स्त्रीलिङ्ग के लिए सा (She) का प्रयोग किया जाता है। सा गच्छति अर्थात् वह जाती है।

5) तत् गच्छति : नपुसंकलिङ्ग के लिए तत् (It) का उपयोग किया जाता है। तत् गच्छति।

इस पाठ में हमने केवल एकवचन पर ध्यान केन्द्रित किया। अगले पाठ में हम द्विवचन और बहुवचन पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

क्रमशः

- आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

पृष्ठ 3 का शेष

मोक्ष का ...

में ही रहता है। ब्रह्म आनन्द स्वरूप है जीव सुख (आनन्द) का भोक्ता होता है इसी सुख में दोनों की समता है।

यह सब प्रमाण इस बात को सिद्ध करते हैं जीव ब्रह्म मोक्षावस्था में भी भिन्न-भिन्न ही रहते हैं यह दोनों एक कभी नहीं होते हैं इसलिये जो जीव को मोक्ष में ब्रह्मरूपता कहते हैं वह सिद्धांत ठीक नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश नवम् समुल्लास में महर्षि ने इस बात को इस प्रकार लिखा है:-

प्रश्न-मुक्ति में जीव का लय होता है वा विद्यमान रहता है?

उत्तर-विद्यमान रहता है।

प्रश्न-कहाँ रहता है?

उत्तर-ब्रह्म में।

अपनी स्वशक्ति से जीवात्मा मुक्ति में हो जाता है। और सङ्कल्प मात्र शरीर होता है जैसे शरीर के आधार रहकर इन्द्रियों के गोलक के द्वारा जीव स्वकार्य करता है वैसे अपनी शक्ति से मुक्ति में सब आनन्द भोग लेता है।

क्योंकि मुक्ति जीव की यह है कि दुःखों से छूटकर आनन्द स्वरूप सर्वव्यापक अनन्त परमेश्वर में जीव का आनन्द में रहना।

इस प्रकार आर्य समाज के सिद्धान्त में मुक्ति भावरूप है अभाव रूप नहीं। मोक्षावस्था में जीव ब्रह्मरूप नहीं बनता प्रत्युत जीवरूप से आनन्द का भोक्ता होता है।

- श्री. स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

आर्य वीर दल दिल्ली का प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 27 मई से 5 जून 2016

स्थान : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, रोहिणी, सैक्टर- 7, दिल्ली-110085

समापन एवं दीक्षान्त समारोह : 5 जून, सायं 4 बजे

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि सब सदस्यों के साथ अधिकाधिक संख्या में पधारकर आर्यवीरों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

जगबीर आर्य — **संचालक (मो. 9810264634)**
बृहस्पति आर्य — **महामंत्री (मो.9990232164)**

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून में दिव्य जीवन निर्माण शिविर

युवक वर्ग : 9 जून से 13 जून 2016 आयु सीमा :15 से 32 वर्ष तक
निर्देशन : आचार्य आशीष जी तपोवन आश्रम तथा सहयोगी शिक्षक वर्ग
विषय : 1. स्टडी स्किल्स् 2. पूर्ण व्यक्तित्व विकास, 3. स्मरण शक्ति तीव्र करने के उपाय, मनोनियंत्रण, 4. सुखी जीवन के टिप्स, ध्यान (मेडीटेशन), आत्म सुरक्षा के उपाय (मार्शल आर्ट्स) एवं 5. वैदिक सार्वजनीय सत्यसिद्धान्तों का परिचय, प्रश्नोत्तर एवं वीडियो शो आदि। भाषा : हिन्दी एवं अंग्रेजी। शिविर शुल्क : भावना पूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना अनिवार्य है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

– ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, मंत्री, मो. 9412051586

प्रेरक प्रसंग

मेरे साथ बहुत लोग थे

पाँच–छह वर्ष पुरानी बात है। अजमेर में ऋषि–मेले के अवसर पर मैंने पूज्य स्वामी सर्वानन्दजी से कहा कि आप बहुत वृद्ध हो गये हैं। गाड़ियों, बसों में बड़ी भीड़ होती है। धक्के–पर–धक्के पड़ते हैं। कोई चढ़ने–उतरने नहीं देता। आप अकेले यात्रा मत किया करें।

स्वामीजी महाराज ने कहा, ''मैं अकेला यात्रा नहीं करता। मेरे साथ कोई–न–कोई होता है।'' मैंने कहा, ''मठ से कोई आपके साथ आया? यहाँ तो मठ का कोई ब्रह्मचारी दीख नहीं रहा।''

स्वामीजी ने कहा, ''मेरे साथ गाड़ी में बहुत लोग थे। मैं अकेला नहीं था।''

यह उत्तर पाकर मैं बहुत हँसा। आगे क्या कहता? बसों में, गाड़ियों में भीड़ तो होती ही है। मेरा भाव भी तो यही था कि धक्कमपेल में दुबला–पतला शरीर कहीं गिर गया तो समाज को बड़ा अपयश मिलेगा। मैंने यह वार्तालाप स्वामी ओमानन्दजी व स्वामी सुमेधानन्दजी को भी सुनाया।

जब लोग अपनी लीडरी की धौंस जमाने के लिए व मौत के भय से सरकार से अंगरक्षक माँगते थे। आत्मा की अमरता की दुहाई देने वाले जब अंगरक्षकों की छाया में बाहर निकलते थे तब यह संन्यासी सर्वव्यापक प्रभु को अंगरक्षक मानकर सर्वत्र विचरता था। इसे अग्रवादियों से भय नहीं लगता था। आतंकवाद के उस काल में यही एक महात्मा था जो निर्भय होकर विचरण करता था। स्वामीजी का ईश्वर विश्वास सबके लिए एक आदर्श है। मृत्युंजय हम और किसे कहेंगे? स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज 'अपने अंग–संग सर्वरक्षक प्रभु पर अटल विश्वास' की बात अपने उपदेशों में बहुत कहा करते थे। स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज के उस कथन को जीवन में उतारने वाले स्वामी सर्वानन्दजी भी धन्य हैं। प्रभु हमें ऐसी श्रद्धा दें।

– साभार

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित हेतु मो. नं. 9540040339 से सम्पर्क करें।**

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर जम्मू में दिनांक 5 जून से 12 जून 2016

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर इस बार जम्मू शहर में 5 से 12 जून 2016 तक लगाया जाएगा। इसमें भाग लेने के लिए 14 वर्ष से अधिक आयु की वे वीरांगनाएं जिन्होंने पहले भी कम–से–कम दो शिविरों में भाग लिया हो, आ सकती हैं। इच्छुक वीरांगनाएं अपने नाम निम्नलिखित नम्बरों पर दे दें ताकि व्यवस्था सुचारु रूप से हो सके।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति	**मृदुला चौहान**	**आरती खुराना**	**विमला मलिक**
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्षा
96722-86863	98107-02760	99102-34595	98102-74318

संस्कृत सम्भाषण शिविर : 5 से 14 जून, 2016

राजधानी पब्लिक स्कूल विकास नगर हस्तसाल उत्तम नगर नई दिल्ली 59

संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली द्वारा दिल्ली संस्कृत अकादमी के सहयोग से नि:शुल्क संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर का समय प्रात: 8:30 से 10:00 बजे रहेगा। इच्छुक संस्कृत सीखने के लिए भाग ले सकते हैं।

डॉ. ब्रजेश गौतम, डॉ. विश्वम्भर दयालु 9968812963, 9868879710,

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज अशोक नगर, नई दिल्ली-18

प्रधान – श्री प्रकाश चन्द्र आर्य
मंत्री – पवन गांधी
कोषाध्यक्ष – श्री ओम प्रकाश चावला

अ. भारतीय दलितोद्धार सभा

आर्य नगर, पहाड़गंज, नई दिल्ली

प्रधान – श्री रवि गुप्त
मंत्री – श्री जन्मेजय राणा
कोषाध्यक्ष – श्री ओम प्रकाश आर्य

गुरुकुल प्रभात आश्रम में प्रवेश-परीक्षा

गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ (उ.प्र.) में नवीन प्रवेशार्थी छात्रों की प्रवेश–परीक्षा 26 जून से 30 जून 2016 तक सम्पन्न होगी। प्रवेशार्थी छात्र की अर्हता पन्चम श्रेणी उत्तीर्ण, मेधावी, स्वस्थ, सुशील एवं आयु 10 वर्ष होनी चाहिए। प्रवेश परीक्ष लिखित व मौखिक दो चरणों में एक दिन में (प्रात: 9 से 11 तथा सायं 2 से 4 बजे तक) होगी। विशेष जानकारी के लिए आचार्य, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी भोला झाल, मेरठ से सम्पर्क करें दूरभाष

–9758747920, 9719325677

शोक समाचार

श्री सुदर्शन शर्मा को मातृशोक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की पूज्या माता जी श्रीमती राजरानी शर्मा जी का दिनांक 26 मई, 2016 को प्रात: 9 बजे उनके जालन्धर स्थित निवास पर निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से अगले दिन मॉडल टाउन, जालन्धर के श्मशानघाट पर किया गया।

माताजी की पुण्य स्मृति शान्ति एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 29 मई की प्रात: सम्पन्न हुई, जिसमें पंजाब की अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

पंडित नन्दलाल 'निर्भय' जी को पुत्र शोक

वैदिक विद्वान एवं कवि पं. नन्द लाल जी 'निर्भय' ग्राम+पोस्ट बहीन, जिला पलवल के पुत्र श्री भगवान देव का मात्र 26 वर्ष की आयु में एक सड़क दुर्घटना में गत दिनों निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पलवल में ही किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

	मुद्रित मूल्य	प्रचारार्थ	
● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	50 रु.	30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	80 रु.	50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/– किलो (5,10, 20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, दूरभाष - 23360150, 9540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 30 मई से रविवार 5 जून, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 2/3 जून, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 1 जून, 2016

छपते-छपते

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नेपाल-2016 की तैयारियों एवं व्यवस्थाओं हेतु केन्द्रीय आर्यसमाज नेपाल का प्रतिनिधि मंडल दिल्ली में

विस्तृत समाचार अगले अंकों में

प्रतिष्ठा में,

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

15वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 15वां आर्य परिवार युवक–युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आर्यसमाज मन्दिर ए ब्लॉक जनकपुरी, नई दिल्ली में दिनांक 3 जुलाई 2016 को आयोजित किया जाएगा। आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से संबंध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्र–अतिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। **पंजीकरण शुल्क मात्र 300/- रुपये।** फार्म की फोटोप्रति भी मान्य है। पंजीकरण फार्म **www.thearyasamaj.org** से डाउनलोड भी किया जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

अर्जुन देव चड्ढा — राष्ट्रीय संयोजक, मो. 9414187428

एस.पी. सिंह — दिल्ली संयोजक, मो. 9540040324

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत संचालित कक्षाएं

व्यावहारिक संस्कृत शिक्षण कक्षा

दिनांक : 8 मई 2016 से निरन्तर प्रति रविवार सायं 5 से 7 बजे
स्थान : गुरुविरजानन्द संस्कृतकुलम, आर्यसमाज आनन्द विहार, एल ब्लॉक हरी नगर, नई दिल्ली–110064
सम्पर्क: महेन्द्र सिंह आर्य, मन्त्री आर्यसमाज (9650183184)

वेद मन्त्र पाठ कक्षा

दिनांक : 7 मई 2016 से निरन्तर प्रति शनिवार सायं 4:30 से 6 बजे
स्थान : आर्य समाज जनकपुरी सी-3, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
अध्यापन : आचार्य प्रणवदेव शास्त्री
सम्पर्क : शिव कुमार मदान (9310474979), श्री अजय तनेजा (9811129892)

प्रशिक्षण के उपरान्त सभी प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे।

स्वास्थ्य चर्चा

गर्मी के मौसम में चेचक से बचाव

आजकल मौसम का मिज़ाज कुछ ठीक नहीं चल रहा है। कभी भीषण गर्मी तो कभी बारिश, जिससे खांसी–जुखाम, बुखार की आम शिकायत तो होती ही है साथ ही आजकल खसरे यानी चेचक का प्रकोप भी काफी मात्रा में देखने को मिल रहा हे। आईये इस बीमारी से निजात पाने के कुछ घरेलू उपाय–

1. गूलर के जिन पत्तों पर चेचक जैसे दाग हों उन पत्तों को पीस कर उसका रस पिलाएं।

2. चेचक निकलने पर कोई दवा न दें। ठंडी चीज या ठंडी हवा न लगे। दाने निकलने पर एक अंजीर के टुकड़े–टुकड़े करके पानी में पकाएं और छान लें इसमें केसर एक रत्ती मिलाकर प्रातः सायं दें।

3. भोजपत्र की धूनी देने से दानों की खुजली कम हो जाएगी और दाने सूख जाएंगे। दाने सूख जाने पर गाय का घी व तिल का तेल लगाने से दानों के निशान खत्म हो जाएंगे।

4. खमीरा मरवारी 3–3 ग्राम प्रातः सायं दें।

5. पहले सप्ताह में प्रवाल पिष्टी एक रत्ती को गोदन्ती भस्म एक रत्ती शहद से दें। दूसरे सप्ताह प्रवाल भस्म दो रत्ती प्रातः शहद से दें। दाने आसानी से निकल कर सूख जाएंगे।

6. सफेद जीरा, धनिया 75–75 ग्राम दरदरा कूट कर इसकी सात पुड़ियां बनाएं। एक पुड़िया रात को 75 ग्राम पानी में भिगोएं। प्रातः मसल छान कर खांड मिलाकर पिलाएं।

7. शर्बत खाकसी 2–2 चम्मच आधा कप पानी में मिलाकर प्रातः सायं दें।

चूर्ण हाजमा : 1. जीरा काला और सफेद भुना, पीपल, सोठ, अजवायन, काली मिर्च, काला नमक 25–25 ग्राम कूट छान कर हींग भुनी 10 ग्राम पीसकर मिला दें। नीबू के रस में मटर बराबर गोलियां बना छाया में सुखाकर खाना खाने के बाद दो गोली चूसें।

2. पांचों प्रकार के नमक या काला और लाहौरी (सेंधा) नमक 10–10 ग्राम अजवायन भुनी हींग, भुनी पांच ग्राम सोंफ 20 ग्राम त्रिफला व सोंठ 50–50 ग्राम कूट छानकर खाना खाने के बाद 5 ग्राम गर्म पानी से लें।

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित "चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद" पुस्तक से साभार। यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली -110001 के पते पर भेज सकते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह